पानी की आत्मकथा

वन्दना, रूड़की

- मै पानी हूँ। आज से करोड़ों वर्ष पहले इस पृथ्वी पर मेरा जन्म और मेरे होने से ही मनुष्यों के जीवन की उत्पत्ति हुई है।
- पृथ्वी के लगभग तीन चौथाई भाग पर मै भिन्न भिन्न रूपों में पाया जाता हूँ। वो मैं ही हूँ जो वाष्प बनकर वायु में मिलकर बादलों के रूप में आकाश पर छा जाता हूँ।
- मेरा जीवन चक्र सदैव सृष्टि के नियमों के अनुसार चलता रहता है।
- आप मनुष्य यह सोचते हो कि मेरा प्रत्येक रूप आपके लिये उपयोगी है, लेकिन ऐसा नहीं है। मेरा तो केवल स्वच्छ और शुद्ध जल रूप ही आपके लिये उपयोगी है। मै अपनी आत्मकथा इसलिये सुनाना चाहता हूँ कि मनुष्य मेरे मूल्य को पहचाने तथा मेरी शुद्धता एवं स्वच्छता को हर कीमत पर बनाये रखे।
- जब मनुष्य मुझे प्रतिदिन की अन्य आवश्यकताओं में खर्च करता है तो शायद ही सोचता है कि मैं प्रकृति का कितना अनमोल रत्न हूँ। मनुष्य के जीवन की सभी क्रियायें मुझसे ही सम्भव हैं आप सब जानते हो **जल ही जीवन है** आपके शरीर में लगभग 65 प्रतिशत मात्रा में मैं ही तो हूँ।
- मनुष्य ने जानबूझकर मेरे ऊपर इतने कुठाराघात किये हैं कि अपने जीवन चक्र के अनुसार सामान्य रूप से चलने में मुझे बड़ी कठिनाई हो रही है।
- जब मुझमें बहुत अधिक जहरीले तथा गन्दगी वाले पदार्थ विसर्जित कर दिये जाते हैं तो मैं दूषित हो जाता हूँ। बड़े-बड़े कारखानों के प्रदूषण ने मेरा जो हाल किया है वह बहुत असहनीय है, कभी-कभी मै भूल जाता हूँ कि मेरा कोई शुद्ध, साफ तथा निर्मल रूप भी है। कुछ स्वार्थी लोगों की वजह से मै पीने के योग्य भी नहीं रह जाता हूँ। लाखों लोग मेरे दूषित रूप के उपयोग से मौत का ग्रास बनते हैं और जब मैं नंगी पहाड़ियों पर बरसता हूँ तो पहाड़ियों का भयंकर कटाव होता है बाढ़ के जल से धरती का विनाश होता है। दुख तो इस बात का है कि मनुष्य फिर भी मुझे और प्रकृति को ही दोष देता है।
- आपको शायद आभास ही नहीं होता कि आप मुझे कितने गलत तरीके से इस्तेमाल करते हैं। जाने-अनजाने मे मुझे बेकार ही गवाँ देते हैं जिसे थोड़ी सी ही जागरूकता से बचाया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर कभी-कभी नल बन्द करना ही भूल जाते हैं और मैं बहता रहता हूँ।
- जब मेरी कमी होती है तो आप मुझे संभाल कर उपयोग करते हैं अन्यथा लापरवाही बरतते हैं, मै चाहता हूँ आप लोग जब भी मेरा उपयोग करें तो मेरे इन गुणों को परखें, ध्यान दें कि मुझ में कोई गन्दगी, कूड़ा-करकट या जहरीला पदार्थ तो नहीं मिला हुआ है।
- आप समझदार हैं, आपकी समझदारी पर ही आने वाली पीढ़ियों का और मेरा भविष्य निर्भर करता है। मेरा उपयोग ध्यान से न होने के कारण आपको दिन-प्रतिदिन नई-नई परेशानियाँ तथा बिमारियाँ झेलनी पड़ती हैं इससे मुझे भी दुःख होता है।

"समस्त प्राणियों का कल्याण चाहते हुए मैं आह्वान करता हूँ कि
मुझसे कीजिये प्यार तथा मित्रता का व्यवहार।"

*****